Ft – एक कनानी महिला का विश्वास मत्ती १५:२१-२८ और मरकुस ७:२४-
३० | 1

– Save This Page as a PDF–

एक कनानी महिला का विश्वास

मत्ती १५:२१-२८ और मरकुस ७:२४-३०

खोदाई: फरीसी और टोरा-शिक्षक प्रभु को अन्यजातियों के क्षेत्र में जाते हुए कैसे देखेंगे? मौखिक ब्यबस्था पर यरूशलेम के धार्मिक नेताओं के साथ टकराव के बाद सूर जाने और एक कनानी महिला के साथ बातचीत करने का यीशु का क्या मतलब था? हम इस महिला के बारे में क्या सीखते हैं? उसके उत्तर ने उसका विश्वास कैसे दर्शाया? शब्दों पर उनके खेल का इरादा क्या है?

चिंतन: जब आप जरूरतमंद लोगों या “बाहरी लोगों” से निपटते हैं तो क्या आप प्रेरितों या येशुआ की तरह अधिक होते हैं? यदि मसीह आपके समुदाय में आए, तो वे कौन “अशुद्ध” हैं जिनकी वह परवाह करेंगे? आप उनके लिए उसके हाथ और पैर कैसे बन सकते हैं? इस महिला की बेटी को ठीक करने के लिए ईसा मसीह लगभग सौ मील चले। परमेश्वर ने आपके जीवन में यह कैसे किया है?

एक कनानी महिला के विश्वास के बारे में यह कहानी पिछली घटना का एक स्वाभाविक अनुक्रम प्रतीत होती है जिसमें यीशु को स्वच्छ और अशुद्ध खाद्य पदार्थों के बीच अंतर मिटाते हुए दिखाया गया है, जबकि यहाँ हम ईसा मसीह को स्वच्छ और अशुद्ध लोगों के बीच अंतर मिटाते हुए देखते हैं। येशुआ का आम तौर पर अन्यजातियों के साथ कोई संबंध नहीं था क्योंकि उनके साथ किसी भी संबंध ने यहूदियों को औपचारिक रूप से अशुद्ध बना दिया था। लेकिन अब मसीहा एक अन्यजाति महिला के साथ जानबूझकर बातचीत करके उदाहरण के द्वारा दिखाता है कि यह और अन्य मौखिक ब्यबस्था अमान्य हैं। एक अन्य उद्देश्य गोइम (गैर-यहूदी राष्ट्रों) के लिए अंतिम मिशन पर जोर देना था। परमेश्वर का राज्य इस्राएल तक ही सीमित नहीं था, भले ही वह सबसे पहले उसके पास आया।

यह तीसरी बार है जब हम यीशु को सुसमाचारों में अन्यजातियों की सेवा करते हुए देखते हैं। उसने अपना मार्ग इस्राएल के उत्तर-पश्चिम के क्षेत्र के लिए निर्धारित किया जिसे सूर और सीदोन के क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। यह वही क्षेत्र है जहाँ एलिय्याह को भेजा गया था, जो आधुनिक लेबनान है। उनका इरादा शिष्यों के साथ निजी समय बिताने का था। लेकिन यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि नाज़रेथ के यीशु ने अपने जीवनकाल के दौरान शायद ही कभी गैर-यहूदी क्षेत्रों की यात्रा की। वास्तव में, उन्होंने अपने यहूदी समुदाय के बाहर किसी के साथ शायद ही कभी व्यक्तिगत बातचीत की हो।

Ft – एक कनानी महिला का विश्वास मत्ती १५:२१-२८ और मरकुस ७:२४-
३० | 2

यह कोई नस्लवाद या आध्यात्मिक श्रेष्ठता नहीं थी, लेकिन वास्तव में, यह काफी उचित और तार्किक है। आख़िरकार, यहोवा का वादा इब्राहीम से शुरू करके इस्राएल को दिया गया था, फिर इसहाक और फिर याकूब को, इसलिए यह उचित है कि वे, वादे के लोग, इसकी पूर्ति के बारे में सबसे पहले सुनें। निःसंदेह, वह समय आएगा जब यह संदेश सभी अन्यजाति देशों तक जाएगा (मत्ती २८:१९)। यहां येशुआ एक अन्यजाति क्षेत्र में प्रवेश करता है और एक बुतपरस्त कनानी महिला की सेवा करता है। यह एक सामान्य शब्द था, जिसका अर्थ था कि वह एक गैर-यहूदी थी।839 यहूदी सामाजिक पैमाने पर एक गैर-यहूदी महिला से कमतर कुछ भी नहीं हो सकता है!

यीशु उस स्थान को छोड़कर सूर और सैदा के क्षेत्र में चले गए। जिस छोटे पूर्वसर्ग ईआईएस का अनुवाद किया गया है वह उल्लेखनीय है। हमारे प्रभु केवल सीमा पार करके फोनीशियन क्षेत्र में ही नहीं आये, बल्कि वह देश के हृदय में गहराई तक चले गये। जोसेफस (यहूदी युद्ध, ३.१) के अनुसार, मसीहा के समय ये दोनों क्षेत्र भूमध्य सागर से जॉर्डन तक फैले हुए थे। यह भूमि की इन चरम सीमाओं तक ही था कि ईसा मसीह फरीसी यहूदी धर्म और मौखिक ब्यबस्था के प्रति इसकी अंध आज्ञाकारिता से पीछे हट गए थे (देखें Ei – मौखिक ब्यबस्था)। वहां, हमारे उद्धारकर्ता ने उपचार के शब्द बोले, और एक कनानी महिला ने इज़राइल के चमत्कार करने वाले रब्बी को बिना उत्तर दिए जाने नहीं दिया।

यह दृश्य पिछले दृश्य से काफी भिन्न है जहां येशुआ गलील में यहूदी क्षेत्र में था। परन्तु अब वह विशुद्ध रूप से गैर-यहूदी देश, फीनिशिया की भूमि में प्रवेश कर रहा था। उन्होंने यहूदी नेतृत्व की शत्रुता का अनुभव किया था, और अपने प्रेरितों की सेवा करने और उन्हें शिक्षा देने के लिए जिस शांति और आराम की उन्हें आवश्यकता थी उसे पाने में असफल रहे थे। परिणामस्वरूप, वह एक घर में घुस गया और नहीं चाहता था कि किसी को इसका पता चले। फिर भी, वह अपनी उपस्थिति को गुप्त नहीं रख सका और एक कनानी महिला, जो ग्रीक थी और सीरियाई फीनिशिया में पैदा हुई थी, ने उसके बारे में सुना (मत्तीयाहू १५:२१; मरकुस ७:२४, ७:२५ए, ७:२६ए)। महान शिक्षक और मरहम लगाने वाले के बारे में खबर इसराइल की सीमाओं से परे बुतपरस्त क्षेत्र में फैल गई थी।

मरकुस का कहना है कि वह महिला ग्रीक थी, जिसका जन्म सीरियाई फोनिशिया में हुआ था। चूँकि वह स्पष्ट रूप से राष्ट्रीयता से ग्रीक नहीं थी, इसलिए ग्रीक संभवतः गैर-यहूदी (यहूदी होने से अलग) या ग्रीक-भाषी के बराबर है। राष्ट्रीयता के आधार पर, महिला सिरोफोनीशियन थी। उन दिनों फेनिशिया प्रशासनिक तौर पर सीरिया का था। इसलिए मरकुस ने संभवतः इस महिला को उत्तरी अफ्रीका में लीबियाई फेनिशिया से अलग करने के लिए सीरियाई फेनिशिया का इस्तेमाल किया। इसलिए, इस महिला के साथ यीशु की बातचीत ग्रीक में हुई होगी, अरामी में नहीं। ऐसा कोई कारण नहीं है कि गलील में पले-बढ़े नाज़रीन ग्रीक नहीं जानते होंगे। फ़िलिस्तीन के गाँवों और कस्बों में, वह आमतौर पर अरामी भाषा का प्रयोग करता था। परन्तु यूनानियों के तटीय नगरों में,

Ft – एक कनानी महिला का विश्वास मत्ती १५:२१-२८ और मरकुस ७:२४-
३० | 3

वह उनसे यूनानी भाषा में बात करता होगा।

परन्तु तुरन्त एक कनानी स्त्री उसके पास आई, और उसके पांवों पर गिर पड़ी, और चिल्लाकर बोली, हे प्रभु, दाऊद की सन्तान। यीशु को दाऊद के पुत्र के रूप में संबोधित करने से, ऐसा लगता था कि उसे इस दावे का ज्ञान था और उस पर विश्वास था कि वह इस्राएल का मेशियाक था। वह हिब्रू शास्त्र के वादे के बारे में भी जानती होगी कि प्रभु का आशीर्वाद केवल यहूदी लोगों के लिए नहीं था, बल्कि अंततः कई अन्यजातियों को भी आशीर्वाद देगा। यहोवा ने अब्राम से कहा था, मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा; मैं तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष ठहरेगा। जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीर्वाद दूंगा, और जो तुझे शाप दे, उसे मैं शाप दूंगा; और पृय्वी के सब कुल तेरे कारण आशीष पाएँगे। (उत्पत्ति १२:१-
३) किसी तरह ऐसा लग रहा था कि इस कनानी महिला को विश्वास था कि इतिहास में वह क्षण आ गया था जब वह गलील के चमत्कारी रब्बी से मिली थी।

उसके अनुरोध में तात्कालिकता का भाव था जब वह चिल्लाई: मुझ पर दया करो! मेरी छोटी बेटी पर एक अशुद्ध आत्मा का साया है और वह भयानक पीड़ा सह रही है (मती १५:२२; मरकुस ७:२५बी)। बुतपरस्ती और मूर्तिपूजा की भूमि में आध्यात्मिक उत्पीड़न और राक्षसी गतिविधि निश्चित रूप से मजबूत और अधिक आम थी। अय्यूब १ और जकर्याह ३ शैतानी गतिविधि और स्वयं शत्रु की वास्तविकता की गवाही दे सकते हैं। दरअसल, हिब्रू में उनके नाम का मतलब ही विरोध करना है। जबकि शैतान और उसके राक्षस इस दुनिया और इसके लोगों को बहुत नुकसान पहुंचा सकते हैं, मसीह में विश्वासियों को इस वादे को पकड़ना चाहिए कि वह जो आप में है वह दुनिया में मौजूद प्रतिद्वंद्वी से बड़ा है (प्रथम जॉन ४:४ सीजेबी) . इसी समझ के साथ यह गैर-यहूदी मां अपनी बेटी के लिए आध्यात्मिक मुक्ति की गुहार लगाने के लिए येशुआ हा-मशियाच के पास आई थी।



उसने यीशु से विनती की कि वह उसकी बेटी में से
दुष्टात्मा को निकाल दे (मरकुस ७:२६बी)। क्रिया एरोटाओ, अपूर्ण काल में है जो निरंतर क्रिया का संकेत देती है। वह गिड़गिड़ाती रही। वह वास्तव में जो मांग रही थी वह एक चमत्कार था। वह मसीहा था और इसलिए, वह कुछ ऐसा मांग रही थी जिसका वादा

Ft – एक कनानी महिला का विश्वास मत्ती १५:२१-२८ और मरकुस ७:२४-
३० | 4

अन्यजातियों से नहीं, बल्कि इस्राएल से किया गया था। उस आधार पर, येशुआ की पहली प्रतिक्रिया काफी चौंकाने वाली थी। उसने उसे कोई जवाब नहीं दिया या कुछ नहीं कहा। इसलिए उनके शिष्यों ने आदान-प्रदान को देखकर शायद यह मान लिया कि उनके रब्बी के पास उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए समय या झुकाव नहीं था। वे उसके पास आए और उससे आग्रह किया, “उसे विदा कर, क्योंकि वह हमारे पीछे चिल्लाती रहती है” (मत्तीयाहू १५:२३)।

जब वह मुद्दे को दबाती रही, तो यीशु ने उसे बताया कि वास्तविक समस्या क्या थी। उसने बारहों (और निस्संदेह कनानी महिला) को याद दिलाया कि उसे केवल इस्राएल की खोई हुई भेड़ों के लिए भेजा गया था (मती १५:२४)! अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान से पहले येशुआ का व्यक्तिगत मिशन केवल यहूदियों – ईश्वर के लोगों के लिए था। रुआच हा-कोडेश दिए जाने के बाद, सुसमाचार पृथ्वी के छोर तक अन्यजातियों तक पहुंच जाएगा (प्रेरितों १:८), जिन्हें मसीहा के माध्यम से इज़राइल में शामिल किया जाएगा (रोमियों ११:१६-२४)। स्थिति निराशाजनक लग रही होगी। वह उसके लिए कुछ नहीं कर सकता था। इसलिए अपनी बेटी को बचाने के लिए बेचैन होकर उसने अपनी याचिका का आधार बदल दिया।

महिला आई और उसके सामने घुटनों के बल बैठ गई (ग्रीक: प्रोस्कुनेओ, जिसका अर्थ है चेहरे को चूमना)। “प्रभु मेरी मदद करें!” उसने कहा (मती १५:२५)। वह अपनी व्यक्तिगत आवश्यकता के आधार पर उसके पास आई थी (देखें En – मसीह के मंत्रालय में चार कठोर परिवर्तन)। लेकिन मसीहा के उत्तर ने फिर भी माँ को अधिक आशा नहीं दी। वास्तव में, यह पूरी तरह से हतोत्साहित करने वाला रहा होगा। यीशु ने एक सादृश्य के साथ उत्तर दिया: पहले बच्चों को वह सब खाने दो जो वे चाहते हैं, क्योंकि बच्चों की रोटी लेना और उसे कुत्तों के सामने फेंकना उचित नहीं है (मती १५:२६; मरकुस ७:२७)। दूसरे शब्दों में, यहूदियों से जो वादा किया गया था उसे लेकर अन्यजातियों को देना उचित नहीं था। यीशु ने जिस शब्द का प्रयोग किया वह कुनारियन था, जिसका शाब्दिक अर्थ पिल्लों के लिए था। क्योंकि वे वाचा के लोग थे, समय के साथ यहूदियों का आध्यात्मिक गौरव बढ़ता गया और बढ़ता गया। आख़िरकार वे गैर-यहूदियों को कुत्तों के रूप में मानने लगे, कुत्ते के लिए शब्द का प्रयोग किया जिसका अनुवाद जंगली जानवरों के रूप में किया गया होगा जो झुंड में घूमते हैं (मती ७:६; लूका १६:२१; दूसरा पतरस २:२२; प्रकाशितवाक्य २२:१५) । यहाँ तक कि किसी अन्यजाति के घर में प्रवेश करना भी अकल्पनीय था क्योंकि तब किसी भी यहूदी को अपवित्र माना जाता था। हालाँकि, एक दिलचस्प मोड़ में, येशुआ ने कुत्ते के लिए मित्रवत शब्द का इस्तेमाल किया जो घरेलू पालतू जानवरों या पिल्लों के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। उनकी प्रतिक्रिया अभी भी काफी चौंकाने वाली थी, लेकिन इसने उस समय की आम समझ पर जोर दिया कि इज़राइल को दिए गए महान खजाने का उद्देश्य बुतपरस्त अन्यजातियों द्वारा अपवित्र करना नहीं था।

और क्योंकि वह एक आस्तिक थी और आध्यात्मिक सत्य को समझ सकती थी, वह उस पाठ को समझ

Ft – एक कनानी महिला का विश्वास मत्ती १५:२१-२८ और मरकुस ७:२४-
३० | 5

गई जिसे वह पढ़ाना चाहता था। उनका जवाब उल्लेखनीय था। वह विनम्रतापूर्वक यीशु के कथन से सहमत हुई और उत्तर दिया: हाँ, प्रभु, परन्तु पिल्ले भी अपने स्वामी की मेज से गिरे हुए बच्चों के टुकड़ों को खाते हैं (मती १५:२७; मरकुस ७:२८)। और यीशु ने उससे प्रेम किया। यहाँ एक उज्ज्वल विश्वास था जिसका उत्तर ना में नहीं लिया जा सकता था; यहां एक महिला अपने घर में राक्षस-ग्रस्त बेटी की त्रासदी से जूझ रही थी, फिर भी उसके दिल में अभी भी इतनी रोशनी थी कि वह हल्की सी मुस्कुराहट के साथ जवाब दे सकती थी। घरेलू पिल्ले परिवार का हिस्सा थे और बच्चे उन्हें प्यार करते थे। लब्बोलुआब यह था कि वह वह नहीं मांग रही थी जिसका यहूदियों से वादा किया गया था, वह केवल वह मांग रही थी जो अन्यजातियों के लिए बढ़ाया गया था।

महिला ने एक सज्जन की जगह ले ली थी, और, यूं कहें तो, पंक्ति में दूसरा स्थान स्वीकार कर लिया था। यीशु उसके उत्तर से प्रसन्न हुए। उस आधार पर, वह उसकी सेवा करने के लिए स्वतंत्र था और उसने उसकी अपील स्वीकार कर ली। तब यीशु ने उस से कहा, हे नारी, तू बड़ा विश्वास रखती है! आपका अनुरोध स्वीकार कर लिया गया है. तुम जा सकते हो; राक्षस ने तुम्हारी पुत्री को छोड़ दिया है। पूर्ण काल का उपयोग किया जाता है, यह दर्शाता है कि यह एक स्थायी इलाज था। और उसकी बेटी उसी क्षण ठीक हो गई। वास्तव में, वह घर गई और उसने अपने बच्चे को बिस्तर पर लेटा हुआ पाया, और दुष्टात्मा गायब हो गई थी (मत्तीयाहु १५:२८; मरकुस ७:२९-३०)।

पूरी स्थिति हमें पहली सदी की यहूदी संस्कृति की एक बेहतरीन तस्वीर देती है। इस तथ्य के प्रकाश में कि यहूदी वाचा के लोग हैं, यह समझ में आता था। अभी अन्यजाति देशों में सुसमाचार की घोषणा करने का समय नहीं आया था। क्योंकि यह ईश्वर की शक्ति है जो विश्वास करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को मुक्ति दिलाती है: पहले यहूदी को, फिर अन्यजातियों को (रोमियों १:१६)। यह स्थिति अन्यजातियों के साथ व्यवहार करने वाले पारंपरिक रब्बीवादी दृष्टिकोण के अनुरूप थी जो यहोवा की तलाश में थे। हालाँकि किसी भी अन्यजाति के लिए इसराइल और उनके ईश्वर से जुड़ने का दरवाज़ा हमेशा खुला रहा है, लेकिन रब्बियों ने इसे बहुत आसान नहीं बनाया।

निष्ठाहीन धर्मांतरण या बुतपरस्त सांस्कृतिक प्रभावों के डर से, यह निर्दिष्ट किया गया था कि अन्यजातियों को अपनी प्रतिबद्धता को स्पष्ट रूप से साबित करने की आवश्यकता है। सबसे निराशावादी दृष्टिकोण में कहा गया है कि इजरायल के लिए धर्मांतरण को सहना एक घाव के समान कठिन है (ट्रैक्टेट येवमोट ४७ बी)। रब्बी सिखाते हैं कि जंगल में सुनहरे बछड़े के पाप के लिए भी मिस्र के बुतपरस्ती से धर्मान्तरित लोगों को दोषी ठहराया जाना चाहिए (निर्गमन रब्बा ४२:६)।

इन संदेहों के कारण, यह समझा गया कि यदि कोई अन्यजाति साधक रब्बी के पास जाता है, तो रब्बी शुरू में उस व्यक्ति को अस्वीकार करने के लिए बाध्य होता है। यहां देखे गए इस वृत्तांत के सबसे दिलचस्प समानांतर में, तल्मूड नोट करता है कि कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न संभावित रूपांतरित व्यक्ति से पूछे जाने चाहिए, जैसे “आपका

Ft – एक कनानी महिला का विश्वास मत्ती १५:२१-२८ और मरकुस ७:२४-
३० | 6

उद्देश्य क्या है,” और “क्या आप जानते हैं कि आज इज़राइल के लोग लगातार पीड़ा में हैं। ” यदि साधक कहता है, “मुझे इसके बारे में पता है और मेरे पास योग्यता नहीं है,” तो उस साधक को तुरंत स्वीकार किया जाना चाहिए और टोरा (ट्रैक्टेट येवामोट ४७ ए) के कुछ उपदेश सिखाए जाने चाहिए।

इस संदर्भ में, इस गैर-यहूदी महिला के साथ ईसा मसीह की मुलाकात इस्राएल के ईश्वर के एक साधक को पहली सदी के रब्बी के बहुत ही स्वाभाविक उत्तर को दर्शाती है। बिना किसी संदेह के, प्रभु ने कनानी महिला को तीन अलग-अलग बार कठोरता से अस्वीकार कर दिया – बिल्कुल भी जवाब नहीं दिया, फिर कहा कि उनका आह्वान केवल यहूदियों के लिए था, और अंत में कहा कि वह किसी अन्यजाति के साथ रोटी साझा नहीं कर सकते। येशु की कृपा के साथ-साथ यह आम तौर पर प्रचलित परंपरा है, जिसके परिणामस्वरूप उस महिला को एक नए शिष्य के रूप में स्वीकार किया गया और उसकी बेटी ठीक हो गई। इसे सभी गैर-यहूदी विश्वासियों के लिए एक सुंदर अनुस्मारक के रूप में काम करना चाहिए कि वे विश्वास के द्वारा मसीहा में रचे गए हैं।

यह बारह लोगों के लिए उस मंत्रालय को ध्यान में रखते हुए सीखने के लिए एक महत्वपूर्ण सबक था जो मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद के दिनों में उन्हें सौंपा जाएगा।

रब्बी शाऊल आज भी हमसे कहते हैं: तुममें से जो गैर-यहूदी हैं, उनसे मैं यह कहता हूं: चूंकि मैं खुद गैर-यहूदियों के लिए भेजा गया एक दूत हूं, इसलिए मैं इस उम्मीद में अपने काम के महत्व को बताता हूं कि किसी तरह मैं कुछ लोगों को भड़का सकूं। मेरे अपने लोग ईर्ष्या करते हैं और उनमें से कुछ को बचाते हैं! क्योंकि यदि उनका येशुआ को त्यागने का अर्थ संसार के लिए मेल-मिलाप है, तो उनके उसे स्वीकार करने का क्या अर्थ होगा? यह मृतकों में से जीवन होगा! अब यदि पहिले फल के रूप में चढ़ाया हुआ हलल्ला पवित्र है, तो सारी रोटी भी पवित्र है। और यदि जड़ पवित्र है, तो डालियाँ भी पवित्र हैं। परन्तु यदि कुछ डालियां तोड़ी गईं, और तुम जंगली जैतून हो, उन में साटे गए, और जैतून के पेड़ की हरी जड़ में बराबर के भागी हो गए (रोमियों ११:१३-१७ सीजेबी)।